PAPER-[illegible] - 15/09/2020
M - 2018 - I

)

अंतरात्मा मानव मस्तिष्क एक विशेष क्रिया है। यह तब सक्रिय होती है। जब बौद्धिकता के आधार पर वस्तुनिष्ठ तथ्यों एवं आँकड़ो का विश्लेषण करते हुये सही या गलत के बीच निर्णय लिया है।

)

भ्रष्टाचार के प्रमुख प्रभाव

1. सरकारी तंत्र को खोखला कर देता है।
2. कर्मचारी निष्क्रिय होते जाते है।
3. सरकारी तंत्र के प्रति जनता की आम धारणा का बनना

(c) महावीर स्वामी के पंच महाव्रत

1. सत्य
2. अहिंसा ↓ मन-वचन-कर्म से हिंसा न करना
3. अपरिग्रह ↓ संपत्ति संग्रहण न करना
4. अस्तेय ↓ चोरी न करना
5. ब्रम्हचर्य ↓ सदा ब्रम्हचर्य का पालन

(d)

विहसल-ब्लोअर :-

किसी भी संस्था या कार्यालय में ऐसा व्यक्ति जो संबंधित संस्था या कार्यालय के भ्रष्टाचार से संबंधित आवाज उठाये उसे विहसल ब्लोअर कहा है।

विहसल + ब्लोअर
↓
सिटी सीटी + बजाने वाला } अर्थात् भ्रष्टाचार खिलाफ आवाज उठाने वाला

→ भारत में भी विहसल-ब्लोअर के संरक्षण के लिये में कानून बनाया गया है।

Scanned by TapScanner

1 (E)

ब्रम्ह समाज

→ 1828 में राजाराम मोहन राय ने
→ शुद्ध एकेश्वरवाद की ~~स्थापना~~ उपासना हेतु

1 (F) गीतांजली

→ रविन्द्र नाथ टैगोर ने बंगला में लिखित
→ 1913 में गीतांजली को लेकर रविन्द्र नाथ जी को नोबल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया
→ प्रकृति प्रेम एवँ मनावतावादी दृष्टिकोण से संबंधित कविताओं का ~~संकलन~~ संकलन

(G) अरस्तू के चार कार्डिनल गुण

1. न्याय
2. शक्ति (साहस)
3. विवेक — सबसे ज्यादा बल विवेक को दिया है।
4. संयम

1 (H) तुलसीदास की तीन रचनाये

1. रामचरितमानस - ~~महाकाव्य~~ — 1572 में रचित कृति
   अवधी - भाषा
2. विनयपत्रिका
3. दोहावली
4. कवितावली

(I) समानुभूति :-

~~या~~ अनुभूति

समानुभूति एक ऐसा ~~गुण~~ है जिसे व्यक्ति दूसरे के कष्ट या पीडा को ~~अपने~~ उसी की तरह महसूस करता है

- यह केवल दुख की स्थिति में ही दिखाई देती है

Scanned by TapScanner

तथा क्षमता गठित करने को उत्पन्न पैदा करती है।

(J) सर्वोदय :-

- जयप्रकाश नारायण द्वारा 1950 में प्रस्तुत 'सर्वोदय योजना'
- मुख्य उद्देश्य - समाज के सभी वर्गों का समान विकास जिससे सभी का उदय अर्थात् वे विकसित हो सके।

(K) मनोवृत्ति के घटक

- संभाव्य शब्द का उपयोग
- संज्ञानात्मक घटक
- भावनात्मक घटक
- व्यवहारात्मक घटक

} तीन ही मनोवृत्ति के घटक प्रयुक्त किये जाते हैं।

(L) केन्द्रीय सतर्कता आयोग

गठन - संथा संनाथम समिति की अनुशंसा पर 1964 में

कार्य - केन्द्रीय सेवाओं में भ्रष्टाचार की जाँच करना एवं कार्यवाही हेतु संस्तुति देना

मुख्यालय - नई दिल्ली

नियुक्ति - 4 सदस्यीय दल - 1 अध्यक्ष एवं 3 सदस्य
- राष्ट्रपति द्वारा एक समिति की अनुशंसा पर

(M) सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा का शाब्दिक अर्थ सत्य के प्रति निष्ठावान रहने से है अर्थात् कोई कार्य या किसी संस्था के प्रति निष्ठा पूर्वक कार्य करने से है।

Scanned by TapScanner

(N) भावनात्मक बुद्धिमत्ता

(O) सद्गुण - शाब्दिक अर्थ - सद् + गुण → अच्छे विचार या गुण
- ये जन्मजात नहीं होते बल्कि निरंतर अभ्यास से सीखे जाने वाले गुण हैं
- प्रत्येक सद्गुण किसी न किसी वासना को कम करने का या समाप्त करने का प्रयास करता है
Ex - धैर्य - चंचलता, ~~क्रोध~~ - संयम - क्रोध

प्रश्न - 2 Ans.

(A) लोक सेवक हेतु आचार संहिता :-

आचार संहिता - नियमों एवं कानूनो का ऐसा संकलन जो सरकारो द्वारा लोकसेवको के पालन हेतु बनाया जाता है

* प्रशासनिक सुधार आयोग के अनुसार "कोई भी सरकार अच्छा काम करनेका अर्थ यह नही है कि उसके कर्मचारी ~~अच्छी~~ योग्य एवं कुशल बल्कि वह तभी अच्छी मानी जायेगी जब उसके कर्मचारी व्यवहारात्मक अनुशासन का भी पालन करे"

आचार संहिता की आवश्यकता

1. लोकसेवको की निष्क्रियता को दूर करने के लिये
2. राजनीतिक तटस्थता बनाये रखने के लिये
3. भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिये
4. लोकसेवकों की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिये

Scanned by TapScanner

→ लोकसेवकों की आचार संहिता संबंधी नियमों के अनुसार यदि कोई भी लोकसेवक इसके नियमों का पालन नहीं करेगा तो संबंधी प्राधिकारी द्वारा दंडित भी किया जायेगा

2 (b)

वस्तुनिष्ठता

व्यक्ति को कोई भी निर्णय करते समय इन आधारों से मुक्त होना चाहिये जो व्यक्ति के व्यक्तिगत चेतना में शामिल हो जैसे - विचारधारा, कल्पनाये, पूर्वाग्रह, दृष्टिकोण

① निष्पक्षता -

व्यक्ति को निर्णय वस्तुनिष्ठ आधार पर करना चाहिये।

निष्पक्षता में दो पक्ष निहित होते है।

① जिस व्यक्ति से हम संबंधित है या पसंद करते हो उसे अवैध रूप से लाभ न देना या जिसे हम पसंद नही करते उसे अवैध रूप से हानि पहुंचाना

② निष्पक्षता साबित करते समय यह भी जरूरी है कि अपने संबंधित या पंसदीदा व्यक्ति के साथ अन्याय भी न करे

उदा॰ शिक्षक द्वारा अपनी बेटी या बेटे के अंके को लेकर

② असमर्थवादी / राजनीतिक निष्पक्षता :

"किसी दल विशेष से जुडाव न होना"

सक्रीय रूप से दल की सदस्यता न लेने से

उदा॰ चीन में राजनीतिक निष्पक्षता नही जबकि भारत व अमेरिका जैसे देशों में स्पष्टता से नजर आती है

Scanned by TapScanner

(2)
(C) उत्तर

भ्रष्टाचार - भ्रष्ट + आचार
↓ |
बिगड़ा + व्यवहार

अर्थात् ऐसा कार्य व्यवहार जो बिगड़ा हुआ हो या अनैतिक हो। भ्रष्टाचार कहलाता है।

के संथानम के अनुसार :-

" सरकारी कर्मचारी द्वारा किया गया ऐसा कार्य जो व्यक्तिगत हित या लाभ को ध्यान में रखकर किया जाता है। भ्रष्टाचार की श्रेणी में गिना जाता है।"

भ्रष्टाचार के प्रकार :-

(1) निविदा के क्षेत्र में
(2) किसी कार्य बदले उपहार या मौद्रिक मूल्य लेना
(3) पुलिस के द्वारा पैसा लेना
(4) नगर निगम द्वारा किसी कार्य को पैसे से करना
(5) सरकारी कर्मचारियों द्वारा काम को लंबित रखना
(6) सरकारी कर्मचारियों द्वारा अपने लोगों का काम दिलवाना
(7) रेलवे टिकट में भ्रष्टाचार

उपरोक्त भ्रष्टाचार पर लगाम लगाना आवश्यक है क्योंकि यह देश की अर्थव्यवस्था को खोखला करने के साथ-(2) यह एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना में बाधा उत्पन्न करता है।

(d) (2) उत्तर

दयानन्द सरस्वती

→ जन्म - 1824 - गुजरात में
→ मूल नाम - मूलशंकर
→ आर्य समाज की स्थापना - 6 Apr 1875 बंबई
→ मूल मंत्र - 'वेदों की ओर लौटो'

Scanned by TapScanner

- दयानन्द सरस्वती के सिद्धांत -

1. वेद ही अंतिम व परम सत्य है।
2. वेद सत्य ज्ञान स्रोत है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में एक बार वेद अवश्य पढ़ना चाहिये
3. निराकार ईश्वर पर विश्वास।
4. मूर्तिपूजा का खंडन करना।
5. स्त्री शिक्षा में विश्वास
6. प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय 1/10 वां भाग समाज कल्याण हेतु देना चाहिये
7. बाल-विवाह बहु विवाह का विरोध
8. अवतारवाद - तीर्थयात्रा का विरोध
9. हिंदी व संस्कृत का प्रचार-प्रसार किया

स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीय सभ्यताओं को पुनः उद्धारक का कार्य किया। साथ समाज में व्याप्त बुराइयों का विरोध साथ ही हिन्दू धर्म से दूर जा चुके लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश हेतु शुद्धि आन्दोलन भी चलाया।

(2) (E) उत्तर

लोकसेवक की आधारभूत योग्यताये

1. उसे अपने निर्णय करते समय वस्तुनिष्ठ कारकों को आधार बनाना चाहिये
2. उसमें सत्यनिष्ठा एवं सहिष्णुता जैसे गुण होना चाहिये
3. उसमें समानुभूति एवं सहानुभूति जैसे गुणों से परिपूर्ण होना चाहिये
4. अशक्त वर्गों के प्रति कार्य करने की अभिलाषा होनी चाहिये
5. प्रतिबद्धता, दृढ़ता एवं सेवा की भावना होनी चाहिये।

Scanned by TapScanner

2 (F) उत्तर

डॉ. राम मनोहर लोहिया
→ 1910 में, अंबेडकर नगर U.P.
→ भारतीय स्वतंत्रता सेनानीयों में अग्रणी भूमिका एवं भारतीय संसद के महत्वपूर्ण सदस्य

- डॉ. राममनोहर लोहिया के सामाजिक- आर्थिक चिन्तन को सप्त क्रान्तियो के नाम से जाना जाता है।
- वे सभी तरह के अन्यायों के विरुद्ध एवं जेहाद बोलने के पक्षधर थे

विचार:-

1. चमड़ी के रंग रची राजकीय, आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ क्रान्ति
2. नर- नारी समानता के लिये क्रान्ति
3. संस्कारगत, जन्मजात जातीप्रथा के खिलाफ, पिछड़ो के विशेष अवसर के पक्षधर
4. अस्त्र- शस्त्र के खिलाफ, सत्याग्रह के लिए क्रांति
5. परदेसी गुलामी के खिलाफ
6. निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ
7. निजी पूँजी की विषमताओं के खिलाफ

लोहिया जी ने कहा था कि ये सातों क्रान्ति विश्वभर में एक साथ चल रही है अतः इन्हें अपने देश में भी चलना चाहिये।

2 (G) उत्तर

(1) मीडिया – जनसंचार का माध्यम है- इसके अंतर्गत तीन प्रकार की मीडिया आती हैं।

(1) प्रिंट मीडिया (2) डिजिटल मीडिया (इलेक्ट्रानिक)

(3) सोशल मीडिया

भ्रष्टाचार को कम करने के उपाय –

(1) भ्रष्टाचार की सूचना और शिक्षा देकर जागरूक करती है।

(2) सोशल मीडिया के माध्यम से वर्तमान में हर व्यक्ति एक पत्रकार उभरकर आया जो नित्य प्रतिदिन भ्रष्टाचार के मामले उजागर कर रहा है।

(3) मीडिया सरकारी व निजी गतिविधियों पर बारीकी से नजर रखता है तथा उन्हे ~~अमम~~ आगाह करता है।

निष्कर्ष - मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। जो कार्यपालिका एवं व्यवस्थापिका की कार्यवाही को जनता के सामने रखता है।

2 (ग) प्रबोधक संप्रेषण :-

यह ऐसी प्रक्रिया जिसमें दूसरो के विचारो, भावनाओं, मनोवृत्ति, एवं स्थापित मान्यताओं को बदलने का प्रयास किया जाता है।

यह एक प्रकार का संप्रेषण या संचार है जिसका उद्देश्य श्रोता या दर्शक की ~~सेसा~~ मनोवृत्ति को अपने अनुरूप करना होता है।

यह चार कारको पर निर्भर करती है।

(1) प्रबोधक संप्रेषणकर्ता - who कौन

(ii) संदेश की अंतर्वस्तु what

(iii) लक्षित श्रोता समूह - Whom

(iv) संप्रेषण की प्रविधि - Which Method

प्रबंधन संप्रेषण के दो ही दृष्टिकोण हो सकते हैं।

(i) आरंभिक दृष्टिकोण (ii) संज्ञानात्मक दृष्टिकोण

2 (a) उत्तर

गुरुनानक
- → सिक्खों के पहले गुरु
- → 1469 में जन्म, नाना साहिब पाक में
- → मृत्यु करतारपुर

गुरुनानक जी के नैतिक विचार -

(i) ईश्वर एक है।

(ii) जगत के कण-कण में ईश्वर व्याप्त है।

(iii) हमें एक ही ईश्वर की उपासना करनी चाहिये

(iv) सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपासना करने वाला भय से मुक्त रहता

(v) सदा प्रसन्न रहना चाहिये -

(vi) बुरे कार्य के बारे में सोचना चाहिये

(vii) लोभ लालच संग्रहवृत्ति बुरी है। दूर रहना चाहिये

(viii) मोक्ष प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिये।

Scanned by TapScanner